दिनांक 24 मई, 2018 को युगान्तर भारती द्वारा ‘‘दामोदर बचाओ’’ कार्यक्रम के अवसर पर माननीया राज्यपाल के अभिभाषण हेतु मुख्य बिन्दुः–

- ➢ पयार्वरण के क्षेत्र में राज्य में सदा सजग रहनेवाली संस्था, युगान्तर भारती द्वारा आयोजित ‘‘दामोदर बचाओ’’ कार्यक्रम का हिस्सा बनने पर प्रसन्नता हो रही है।
- ➢ दामोदर झारखण्ड के विकास की जीवनरेखा है। इसे एक पवित्र नदी माना जाता है। इसका उद्‍गम स्थल इसी चुल्हापानी गांव में है जहां दामोदर बचाओ आंदोलन द्वारा प्रतिवर्ष दामोदर महोत्सव मनाया जाता है।
- ➢ यहां के स्थानीय लोगों का विश्वास है कि चुल्हापानी में देवताओं का वास है। इसीलिए उद्‍गम स्थल से 35 किलोमीटर दूर केकराही गढ़ा गाँव तक इसका नाम देवनद है।
- ➢ दामोदर के दोनों किनारों पर औद्योगिक एवं आर्थिक गतिविधियों का साम्राज्य खड़ा है। इस साम्राज्य का आधार दामोदर का पवित्र जल है।
- ➢ कालांतर में यहाँ स्थापित औद्योगिक समूहों से दामोदर का भीषण प्रदूषण शुरू हुआ और यह दुनिया के सबसे अधिक प्रदूषित नदियों में गिना जाने लगा।
- ➢ दामोदर के दोनों किनारों पर दर्जन भर coal factories खड़ी हैं। तेनुघाट थर्मल एवं चन्द्रपुरा थर्मल पावर प्लांट के साथ-साथ सेल का बोकारो steel plant भी इस क्षेत्र में है। इन सभी के प्रदूषण के कारण दामोदर

का पानी स्नान एवं अन्य मानवीय उपयोग के लायक नहीं रह गया था।

- इस स्थिति को बदलने के लिए माननीय मंत्री श्री सरयू राय जी के नेतृत्व में युगान्तर भारती संस्था ने दामोदर बचाओ आंदोलन के बैनर तले पहल आरंभ की और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील लोगों को एकत्र किया। इसका सार्थक परिणाम हुआ है।
- प्रदूषक इकाइयों ने प्रदूषण नियंत्रण के लिए आवश्यक उपाय किये हैं और अपने प्रदूषित बहिस्राव को दामोदर में जाने से रोका है। इसके लिए उपयोग किये जानेवाले जल का recycling किया है और zero discharge के करीब पहुंचे हैं। इसका नतीजा हुआ है कि दामोदर का पानी जगह-जगह साफ होने लगा है।
- दामोदर बचाओ आंदोलन के दौरान दामोदर के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं से लोगों को परिचित कराने का अभियान 2006 से आरम्भ हुआ। यह महोत्सव जनजागरण का एक प्रभावी माध्यम साबित हुआ है।
- आप सभी जानते हैं कि दामोदर भगवान विष्णु के सहस्र नामों में से एक है। दामोदर महोत्सव के माध्यम से यह सन्देश दिया जाता है कि यह विष्णु स्वरूपा एक पवित्र नदी है। इसके कारण दामोदर को स्वच्छ रखने के प्रति लोगों के मन में रुझान बढ़ा है। प्रत्येक वर्ष गंगा दशहरा के दिन दामोदर महोत्सव के कार्यक्रम में हजारों लोग शामिल होते हैं और इसे प्रदूषण से मुक्त करने का संकल्प लेते हैं।

- मुझे जानकारी मिली है कि दामोदर का जल अब औद्योगिक प्रदूषण से मुक्त होने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसकी मैं सराहना करती हूँ और जिन लोगों ने इसमें योगदान दिया, वे बधाई के पात्र हैं।
- हम सभी जानते हैं कि सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ है। नदियां भारत माता के गले में हार के जैसी हैं। आज नदियों पर औद्योगिक प्रदूषण के आलावा नागरिक प्रदूषण का खतरा उपस्थित हो गया है। नदियों के किनारे औद्योगिक कॉलोनियां, छोटे-बड़े नगरों से निकलनेवाले जल-मल का समुचित प्रबंध किये बिना नदियों को स्वच्छ रखना असंभव है। इसपर गंभीरता से विचार होना चाहिए। यह कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि नदी नहीं तो हम नहीं।
- नदियों की मुख्य धारा इसकी सहायक नदियों से मिलकर बनती है। सहायक नदियों का निर्माण भी लघु जल स्रोतों के माध्यम से होता है। किसी भी छोटी-बड़ी नदी के जीवन सहायक नदियों एवं अन्य लघु जल स्रोतों का संरक्षण जरुरी है। लघु जल स्रोत सुरक्षित नहीं रहेंगे तो नदियों एवं उनकी सहायक नदियों का अस्तित्व भी नहीं बचेगा।
- झारखण्ड राज्य में स्वर्णरेखा, शंख और दक्षिण कोयल नदी को छोड़ शेष सभी नदियों का जल गंगाजी में प्रवाहित होता है। झारखण्ड का करीब 70 % भू-भाग गंगा बेसिन के अंतर्गत आता है और इसका जल गंगाजी में जाता है। इस तरह दामोदर गंगाजी का एक सहायक नदी है।

- हमारे पूर्वजों की सोच कितनी अग्रगामी है कि जिस गंगा दशहरा के दिन मां गंगा अवतरित हुईं और एक विपुल जलराशि का प्रादुर्भाव हुआ उसके अगले दिन अर्थात एकादशी को निर्जला एकादशी के रूप में मनाया जाता है। उस दिन लोग बिना अन्न-जल ग्रहण किये एकादशी का व्रत रखते हैं। इसके पीछे भी एक पर्यावरणीय संदेश है कि पर्याप्त जल रहने के बाद भी जल की खपत करने में संतुलन बरता जाना चाहिए। इस भावना को आगे बढ़ाने की जरुरत है।
- इसलिए मैं लोगों से अपील करना चाहती हूँ कि गंगा दशहरा के दिन को जल स्रोत संरक्षण दिवस मनाया जाए और जल स्रोतों के किनारे कार्यक्रम आयोजित किये जायें, नदियों की आरती की जाये। साथ ही सभी नदियों की स्वच्छता की दिशा में नागरिकगण बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका का निर्वहन करें।

जय हिन्द्! जय झारखंड!